सखी मंडल की सशक्त महिलाएं

आजीविका डेस्क

अदम्य साहस, अतुलनीय इच्छाशक्ति एवं हौसलों की मिसाल बन गांव की महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं. गरीबी के अंधकार को मिटाकर विकास की लौ से रोशन करने के लिए ये महिलाएं आज अपने संगठन को हथियार बना रही हैं. महिला संगठनों के कार्यों और महिलाओं की भागीदारी ने झारखंड के गांवों में विकास की एक ऐसी यात्रा शुरू की है जो आने वाले दिनों में गरीबी जैसे नासूर को जड़ से उखाड़कर ही दम लेगी. महिला शक्ति की ऐसी मिसाल शायद ही आपको कहीं देखने को मिले, जो झारखंड के ग्रामीण इलाकों के कायाकल्प का पर्याय बन गयी हैं.

झारखंड में गठित सखी मंडल की दीदियां आज विकास की नई इबारत लिख रही हैं. राज्य में गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका प्रोत्साहन के लिए झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (जेएसएलपीएस) लगातार प्रयासरत है. महिला सशक्तीकरण के जरिए गरीबी उन्मूलन के प्रयासों से गांवों में बदलाव की बयार बह रही है. जेएसएलपीएस राज्य के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं का समूह गठित कर उनकी वित्तीय मदद करते हुए उन्हें आजीविका के साधनों से जोड़ता है ताकि ग्रामीण परिवार अपने बूते गरीबी को मात देकर अपना जीवन स्तर सुधार सकें. इस लक्ष्य को साधने के लिए राज्य में आजीविका मिशन के तहत सखी मंडल, ग्राम संगठन एवं क्लस्टर फेडरेशन का गठन किया गया है जो महिलाओं को संगठित कर उन्हें आजीविका से जोड़कर आर्थिक रूप से मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

जेएसएलपीएस के जरिए अब तक राज्य में 1,38000 सखी मंडलों में करीब 29 लाख परिवारों की ग्रामीण महिलाओं को जोड़ा गया है. ये सखी मंडल की महिलाएं अपने संगठन के जरिए बचत एवं सामाजिक कार्य तो करती ही हैं, अपने परिवार के आजीविका के साधनों को भी मजबूत करती हैं. इस पूरी प्रक्रिया में सबसे खास बात ये है कि सखी मंडल की महिलाएं ही गांव में सखी मंडल के गठन का कार्य करती हैं जिन्हें सीआरपी कहा जाता है. गांव के लिए चलाए जा रहे इस पूरे प्रयास को ये ग्रामीण महिलाएं ही अमलीजामा पहना रही हैं. पूरे राज्य में सखी मंडल के ऊपर की संस्था ग्राम संगठन का गठन भी तेजी से किया जा रहा है. अब तक करीब 16000 ग्राम संगठन का गठन किया गया है और करीब 558 से ज्यादा क्लस्टर फेडरेशन का भी गठन किया जा चुका है.

सखी मंडल की ताकत का अंदाजा आप इस बात से लगा सकते हैं कि राज्य के 23 क्लस्टर फेडरेशन ने स्वतंत्र तौर पर पूरी प्रक्रिया का पालन करते हुए अपने-अपने संकुल मैनेजर नियुक्त किए हैं और अपनी कमाई से मैनेजर को मासिक 10 हजार रुपये मानदेय दे रहे हैं. राज्य में दर्जनों क्लस्टर फेडरेशन करोड़पति बन चुके हैं और अच्छी मासिक कमाई भी कर रहे हैं. ये फेडरेशन आज अपने बूते गांव में बदलाव के वाहक के रूप में विकसित हो रहे हैं.

अपनी एकजुटता प्रदर्शित करतीं शारदा आजीविका महिला क्लस्टर संगठन की दीदियां.

सखी मंडलों से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं की आजीविका को सशक्त बनाने के लिए आजीविका मिशन के तहत कई तरह के प्रयास किए जा रहे हैं. वित्तीय साक्षरता से लेकर बैंक कर्ज एवं बीमा तक की सुविधाओं से गांवों को जोड़ा जा रहा है. झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी के प्रयासों से वित्तीय साल 2019-20 में 52329 सखी मंडलों को 619.27 करोड़ की राशि बैंक से क्रेडिट लिंकेज के रुप में उपलब्ध कराई गई है. इसके साथ ही 10 लाख से ज्यादा परिवारों को बीमा योजनाओं से भी जोड़ा गया है.

1000 से ज्यादा ग्रामीण महिलाओं को ग्रामीण परिवारों की सुविधा के लिए बीसी सखी के रुप में तैयार किया गया है, जो अपने गांव और आस-पास के क्षेत्रों में घर-घर तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचा रही हैं.

4500 सखी मंडल व ग्राम संगठन की बहनें पूरे राज्य के आंगनबाड़ी केंद्रों में टेक होम राशन (टीएचआर) के वितरण का कार्य कर रही हैं. कुपोषण को उखाड़ फेंकने की दिशा में यह अनूठा कदम है.

सखी मंडल के जरिए वित्त पोषण एवं बचत का लाभ उठाकर लाखों महिलाएं आज विभिन्न आजीविका के कार्यों को कर रही हैं. ग्रामीण परिवारों की सुविधा के लिए करीब 1000 से ज्यादा ग्रामीण महिलाओं को बीसी सखी के रुप में तैयार किया गया है जो अपने गांव और आस-पास के क्षेत्रों में घर-घर तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचा रही हैं.

पलामू जिले के लेस्लीगंज ब्लॉक के बनुआ गांव की लालमती देवी बताती हैं कि वह 2017 में नीतू आजीविका सखी मंडल से जुड़ीं. पहले उन्हें खेती में पूंजी लगाने के लिए अपने गांव के साहूकारों से उच्च ब्याज दर पर ऋण लेना पड़ता था. इसकी वजह से 2-3 एकड़ जमीन होने के बावजूद वह खेती के लिए पर्याप्त पूंजी नहीं जुटा पाती थीं, लेकिन अब सखी मंडल से आसानी से ऋण मिल जाता है. वह अब तक छोटे-बड़े ऋण मिलाकर लगभग 1.5 लाख रुपए तक की राशि ले चुकी हैं. इस राशि का अधिकांश हिस्सा कृषि में निवेश कर उन्होंने अच्छा मुनाफा कमाया है और खेती से हुई आमदनी से लगभग सारा ऋण भी उन्होंने चुकता कर दिया है.

झारखंड के करीब साढ़े चार हजार सखी मंडल व ग्राम संगठन की बहनें पूरे राज्य के आंगनबाड़ी केंद्रों में टेक होम राशन (टीएचआर) के वितरण का कार्य कर रही हैं. इस पहल से जुड़कर सखी मंडल की बहनों की खुशी का ठिकाना नहीं है. वो इसे अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देख रही हैं और इस पहल से आने वाले दिनों में होने वाली कमाई का भी जिक्र करती हैं. राज्य से कुपोषण को उखाड़ फेंकने की दिशा में यह अनूठा कदम है. आजीविका मिशन के तहत गठित सखी मंडल की हजारों महिलाएं आंगनबाड़ी केंद्रों में टेक होम राशन का सप्लाई कर रही हैं.

पूरे राज्य में करीब 4616 सखी मंडल एवं ग्राम संगठनों से राज्यभर के 38075 आंगनबाड़ी केंद्रों को टैग किया गया है. सरकार की इस पहल से आंगनबाड़ी केंद्रों तक समय पर राशन उपलब्ध करवाया जा रहा है ताकि गर्भवती, धात्री महिलाओं एवं कुपोषित तथा अति कुपोषित बच्चों को इस राशन से समय रहते पौष्टिक पोषाहार दिया जा सके. चूंकि सखी मंडल एवं गांव की महिलाएं ही आंगनबाड़ी की लाभुक हैं एवं सप्लाई का काम भी इन्हीं के जिम्मे है, इस वजह से गुणवत्ता एवं पारदर्शिता भी बरकरार रहती है. सबसे बड़ी बात तो ये है कि ग्रामीण महिलाओं को इससे अतिरिक्त आय हो रही है.

इस पहल की सबसे खास बात ये है कि ग्रामीण महिलाओं का संगठन सिर्फ गांव ही नहीं शहर के आंगनबाड़ी केंद्रों में भी टेक होम राशन सप्लाई का कार्य कर रहा है. इससे यह पता चलता है कि कैसे ये महिलाएं अपनी आजीविका को लगातार सशक्त करने के लिए प्रयासरत हैं. अकेले नवंबर माह में इस कार्य में इन सखी मंडलों ने सप्लाई कार्य के लिए लोकल स्तर पर करीब 40 करोड़ रुपये का ट्रांजेक्शन किया है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था तो मजबूत हो ही रही है, सखी मंडलों की दीदियों की भी अच्छी कमाई हो रही है.

एक बुजुर्ग महिला लाभुक को पेंशन की राशि देतीं बीसी सखी.

टीएचआर के तहत राशन का वितरण करतीं सखी मंडल की दीदी.